दो शब्द

चेतना के सागर से उत्पन्न हुआ है संत कबीर का यह अनुरागसागर जिसके अध्ययन से भक्त लोग परमपुरूष के चरणों में लीन हो सकते हैं। विदुषी–मणि अगम कुलश्रेष्ठ ने अनुरागसागर का गहन अध्ययन करके भक्त जनों का अत्यन्त उपकार किया है। स्वयं संतमत का चरम–सोपान राधास्वामी सम्प्रदाय की अनुयायी होने के कारण उन्होंने सारबचन से भी उद्धरण करते हुए अपनी स्थिति को सिद्ध किया है।

अनुरागसागर कबीर साहब का एक दिव्य और भव्य ग्रन्थ है जिसमें सतगुरु का महत्त्व, सत्तलोक का वर्णन, सत्तनाम की महिमा और कुछ उनकी जीवन की घटनाओं का प्रस्ताव मिलता है। संतमत के विकास में संत कबीर, गुरुनानक और तुलसीसाहब के उपदेश और परिभाषाएं कैसे परिष्कृत रूप में उपलब्ध हैं और परम संतों की वाणी जैसे सारबचन व प्रेमपत्र आदि में कैसे परिनिष्ठित रूप को लिया गया है, यह सब इस अध्ययन से समझ सकते हैं। चारों युगों में संत मत का प्रभाव कैसा रहा? काल और आद्या कौन हैं? उनके फंदे से जीव कैसे निकल सकता है? परम संत, सद्गुरू के अवतार कैसे हुए ? इन सब का समाधान हमको इस अध्ययन में प्राप्त होता है। इस अध्ययन में परम संतों के द्वारा किया हुआ चेतना का वैज्ञानिक–विश्लेषण भी समाया हुआ है साथ ही अत्याधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से संतमत के सिद्धान्तों की परिपुष्टि भी की गयी है। ऐसे अध्ययन हमको संत व परम संतों की बानी को समझने में अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होते हैं। बधाई की पात्रा हैं विद्वत् कुलश्रेष्ठा अगम कुलश्रेष्ठ।

आशा है कि श्रीमती अगम कुलश्रेष्ठ संत साहित्य का दार्शनिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से और भी गंभीर अध्ययन करके इस क्षेत्र में सम्भावित शोधकार्य को सुशोभित करें और परमपुरूष की दया की पात्र बनें और दयालबाग शिक्षण संस्थान की प्रतिष्ठा को बढायें।

पी श्रीराममूर्ति
P. Sriramamurti
Rtd. Professor of Sanskrit
Andhra University

पी0 श्रीराममूर्ति